पु॰ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Question Bank (2022-23)

Grade-VII
Subject- Hindi

(अपठित-विभाग)

प्रश्न-1 अपठित गदयांश और पदयांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1) भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। जीवन का भोग त्याग के साथ करो।' यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन में जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिलता है। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका कारण था अकबर का जन्म रेगिस्तान में होना और उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत के अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे, मगर जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह जैसी मुसीबत झेली थी। उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। श्री विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

प्रश्न

(1) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) भोजन का असली स्वाद किसको मिलता है?
(3) 'जीवन का भोग त्याग के साथ करो'-कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
(4) परमार्थ शब्द की संधि विच्छेद कीजिए |
(5) महाभारत में किसकी जीत हुई ?
(6) श्री विंस्टन चर्चिल ने क्या कहा था ?
(7) " आनंद " शब्द का विलोम अर्थ लिखिए |
(8) अकबर का जन्म कहाँ हुआ था ?
(9) "मुसीबत "शब्द का समान अर्थ लिखिए |
(10) ________के सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं |

उत्तर:

(1) गद्यांश का उचित शीर्षक-'साहस और संघर्षपूर्ण जीवन।'
(2) भोजन का असली स्वाद उस व्यक्ति को मिलता है जो कुछ दिन भूखा रह सकता है। जिसका पेट भरा है वह भोजन का आनन्द ले ही नहीं सकता ने उसका लाभ ही उठा सकता है।
(3) जीवन में भोग से सुख तभी मिल सकता है जब मनुष्य त्याग के मार्ग पर चले। संसार जो कुछ है वह सब केवल एक ही मनुष्य के लिए नहीं है, दूसरों को भी उसकी आवश्यकता है तथा उस पर उनका भी अधिकार है, यह सोचकर उनके लिए त्याग करने से ही उपभोग का आनन्द प्राप्त होता है।
(4) परम + अर्थ = परमार्थ
(5) महाभारत में पांडवो की जीत हुई |
(6) श्री विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है।

(7) " दुख "
(8) अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था |
(9) "आफत "
(10) आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

2) भारतवर्ष पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यहाँ सभी ऋतुएँ अपने समय पर आती हैं और पर्याप्त काल तक ठहरती हैं। ऋतुएँ अपने अनुकूल फल-फूलों का सृजन करती हैं। धूप और वर्षा के समान अधिकार के कारण यह भूमि शस्यश्यामला हो जाती है। यहाँ का नगाधिराज हिमालय कवियों को सदा से प्रेरणा देता आ रहा है और यहाँ की नदियाँ मोक्षदायिनी समझी जाती रही हैं। यहाँ कृत्रिम धूप और रोशनी की आवश्यकता नहीं पड़ती। भारतीय मनीषी जंगलं में रहना पसन्द करते थे। प्रकृति-प्रेम के ही कारण यहाँ के लोग पत्तों में खाना पसन्द करते हैं। वृक्षों में पानी देना एक धार्मिक कार्य समझते हैं। सूर्य और चन्द्र दर्शन नित्य और नैमित्तिक कार्यों में शुभ माना जाता है।पारिवारिकता पर हमारी संस्कृति में विशेष बल दिया गया है। भारतीय संस्कृति में शोक की अपेक्षा आनन्द को अधिक महत्व दिया गया है। इसलिए हमारे यहाँ शोकान्त नाटकों का निषेध है। अतिथि को भी देवता माना गया है-'अतिथि देवो भवः।

प्रश्न

(1) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) भारतवर्ष की भूमि शस्यश्यामला कैसे है?
(3) भारतीय प्रकृति-प्रेम किस प्रकार प्रकट करते हैं?
(4) भारतीय संस्कृति में किसको अधिक महत्व दिया गया है ?
(5)" भूमि " शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए |
(6) भारतीय मनीषी कहाँ रहना पसंद करते हैं ?
(7) अतिथि को क्या माना गया है ?
(8) किस पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है ?
(9) "चंद्र "शब्द का समान अर्थ लिखिए |
(10) वृक्षों में पानी देना एक ____________ समझते हैं।

उत्तर:

(1) गद्यांश का उचित शीर्षक- 'भारत पर प्रकृति की कृपा'।
(2) भारत में धूप तथा वर्षा उचित समय पर तथा आवश्यकता के अनुसार प्राप्त होती है। इस कारण भारत की भूमि पर फसलें तथा पेड़-पौधे सदा उगते हैं और यह भूमि शस्यश्यामला रहती है।
(3) भारत के लोगों का प्रकृति के प्रति गहरा प्रेम रहा है। इसी कारण खाना खाने के लिए वे बर्तनों के स्थान पर पेड़ों के पत्तों का प्रयोग करते हैं। वे वृक्षों में पानी देना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं। अनेक अवसरों पर सूर्य तथा चन्द्रमा का दर्शन करना शुभ समझा जाता है।
(4) भारतीय संस्कृति में शोक की अपेक्षा आनन्द को अधिक महत्व दिया गया है।
(5) " धरती " , " जमीन "|
(6) भारतीय मनीषी जंगलं में रहना पसन्द करते थे।
(7) अतिथि को भी देवता माना गया है|
(8) भारतवर्ष पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है।
(9) " शशि "
(10) वृक्षों में पानी देना एक धार्मिक कार्य समझते हैं।

3) कर्तव्य-पालन और सत्यता में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो मनुष्य अपना कर्तव्य-पालन करता है वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है जिससे इस संसार में मनुष्य अपने कार्यों में सफलता पा सकता है, इसीलिए हम लोगों को अपने कार्यों में सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है। झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता के कारण होती है। बहुत से लोग नीति और आवश्यकता के बहाने झूठ की बात करते हैं। वे कहते हैं कि समय पर बात को प्रकाशित न करना और दूसरी बात को बनाकर कहना, नीति के अनुसार, समयानुकूल और परम आवश्यक है। झूठ बोलना और कई रूपों में दिखाई पड़ता है। जैसे चुप रहना, किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बतलाना, झूठ-मूठ दूसरों के साथ हाँ में हाँ मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना और सत्य को न बोलना इत्यादि। जबकि ऐसा करना धर्म के विरुद्ध है, तब ये सब बातें झूठ बोलने से किसी प्रकार कम नहीं हैं।

प्रश्न

(1) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
(2) संसार में मनुष्य को सफलता दिलाने वाली वस्तु क्या है?
(3) झूठ की उत्पत्ति किन दुर्गुणों से होती है? ।
(4) सत्य, कायरता तथा पाप शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।
(5) बहुत से लोग _______ और ________ के बहाने झूठ की बात करते हैं।

उत्तर:

(1) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक-कर्त्तव्य और सत्यता'।
(2) संसार में मनुष्य को सफलता दिलाने वाली वस्तु 'सत्यता' है।
(3) झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता से होती है।
(4) विलोम शब्द-सत्य-झूठ, कायरता-वीरता, पाप-पुण्य।
(5) बहुत से लोग <u>नीति</u> और <u>आवश्यकता</u> के बहाने झूठ की बात करते हैं।

(4) छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित
क्षण छाया मत छूना मन, होगा दुख दूना।
यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन
छाया मत छूना मन,
होगा दुख दूना। दुविधा-हत साहस है,
दिखता है पंथ नहीं, देह सुखी हो पर
मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?

जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(1) कवि किसकी छाया को न छूने की बात करता है और क्यों?

उत्तर- कवि मनुष्य को बीते लम्हों की याद ना कर भविष्य की ओर ध्यान देने को कह रहा है। कवि कहते हैं कि अपने अतीत को याद कर किसी मनुष्य का भला नहीं हुआ है बल्कि मन और दुखी हो जाता है।

(2) यथार्थ कैसा है?

उत्तर- कवि कहते हैं कि मनुष्य सारी जिंदगी यश, धन-दौलत, मान, ऐश्वर्य के पीछे भागते हुए बिता देता है जो की केवल एक भ्रम है। कवि कहते हैं कि ये ठीक उसी प्रकार है जैसे रेगिस्तान में पशु पानी की तलाश में भटकता है।

(3) शरद-रात के चाँद के माध्यम से कवि क्या कहते हैं?

उत्तर- कवि कहते हैं कि जिस प्रकार शरद पूर्णिमा की रात को चाँद न निकले तो उसका सारा सौंदर्य और महत्त्व समाप्त हो जाता है उसी प्रकार अगर मनुष्य को जीवन में सुख-संपदा नहीं मिलती तो इसका दुख उसे जीवन भर सताता है।

(4) " कठिन " शब्द के दो विलोम शब्द लिखिए |

उत्तर- " आसान " , " सरल "

(5) पदयांश का उचित शीर्षक लिखिए |

उत्तर- "अतीत की छाया "

(6) "चाँद "शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए |

उत्तर- "हिमांशु ", "शशि "

(7) यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।

(8) पदयांश में से समान तुक वाले शब्द छांटकर लिखिए |

उत्तर- 1) सुहावनी- मनभावनी 2) सरमाया- भरमाया
3) छुना- दुना

(9) अतीत को याद कर किसी मनुष्य का भला नहीं हुआ है |

(10) रेगिस्तान में पशु पानी की तलाश में भटकता है।

(5) कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ठोकर मार, पटक मत माथा
तेरी राह रोकते पाहन
कुछ भी बन, बस कायर मत बन
युद्ध देही कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर
या तो जीत प्रीति के बल पर
या तेरा पथ चूमे तस्कर
प्रति हिंसा भी दुर्बलता है
पर कायरता अधिक अपावन
कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ले-देकर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने तुझको सींचा

बहा युगों तक खून-पसीना।
कुछ न करेगा? किया करेगा

रे मनुष्य! बस कातर क्रंदन? कुछ भी बन,
बस कायर मत बन तेरी रक्षा का ना मोल है
पर तेरा मानव अमोल है
यह मिटता है वह बनता है
यही सत्य की सही मोल है।
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

(1) कवि क्या करने की प्रेरणा दे रहा है?

उत्तर- कवि कहते हैं कि तेरे सामने कैसी भी विपत्ति क्यों न आए तुझे कायर बनकर पीठ नहीं दिखानी है। परिस्थितियों से लड़ते हुए, रास्ते में आने वाली मुश्किलों को ठोकर मारते हुए कवि कायर न बनने की प्रेरणा दे रहे हैं।

(2) कवि के अनुसार किस तरह का जीवन व्यर्थ है?

उत्तर- कवि के अनुसार मनुष्य को समझौता करके जीवन नहीं जीना है। केवल आँसू बहाते हुए जीवन को व्यर्थ नहीं गँवाना है। जब तक गम को ठोकर मारकर मानवता की सेवा करते हुए उसके लिए खून-पसीना बहाते हुए यदि न जीया तो जीवन व्यर्थ है।

(3) सत्य की सही मोल कवि ने किसे कहा है?

उत्तर- कवि कहते हैं कि मनुष्य के भीतर की मानवता का कोई मोल नहीं। जीवन में बनना और मिटना तो लगा रहता है। मनुष्य के आगे सब कुछ अर्पण करना सही है लेकिन दुष्ट के आगे आत्म-समर्पण नहीं करना चाहिए।

(4) " कायर " शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए |

उत्तर- " डरपोक ", "बुजदिल "

(5) "जीवन " शब्द का विलोम शब्द लिखिए |

उत्तर- "मृत्यु "

(व्याकरण- विभाग)

प्र-2 संधि विच्छेद कीजिए |

1) राष्ट्राध्यक्ष – राष्ट्र + अध्यक्ष
2) वार्तालाप – वार्ता + आलाप
3) पुस्तकालय – पुस्तक + आलय
4) विकलांग – विकल + अंग
5) आनन्दातिरेक – आनन्द + अतिरेक
6) कामायनी – काम + अयनी
7) दीपावली – दीप +अवली
8) दावानल – दाव + अनल
9) महात्मा – महा + आत्मा
10) हिमालय – हिम + आलय
11) देशान्तर – देश + अन्तर
12) सावधान – स + अवधान
13)गिरीश – गिरि + ईश
14) वारीश – वारि + ईश
15) गणेश – गण + ईश
16)सुधीन्द्र – सुधी + इन्द्र
17) देशोपकार – देश + उपकार
18) सूर्योदय – सूर्य + उदय
19) रोगोपचार – रोग + उपचार
20) ज्ञानोदय – ज्ञान + उदय
21)नयनाभिराम – नयन + अभिराम
22) युगान्तर – युग + अन्तर

प्र-3 उपसर्ग से नए शब्द बनाए |

- **उपसर्ग** **उपसर्ग से बने शब्द**
- अन अनबन, अनपढ़, अनजान, अनहोनी, अनमोल, अनचाहा
- अध अधपका, अधमरा, अधजला, अधखिला, अधनंगा, अधगला
- उन उनचालीस, उन्नीस, उनतीस, उनसठ, उन्नासी
- औ औगुन, औगढ़, औसर, औघट, औतार
- कु कुपुत्र, कुरूप, कुख्यात, कुचक्र, कुरीति
- चौ चौराहा, चौमासा, चौपाया, चौरंगा, चौकन्ना, चौमुखा
- पच पचरंगा, पचमेल, पचकूटा, पचमढ़ी
- पर परहित, परदेशी, परजीवी, परकोटा, परलोक, परोपकार
- बिन बिनखाया, बिनब्याहा बिनबोया, बिनमाँगा, बिनबुलाया
- भर भरपेट, भरपूर, भरकम, भरसक, भरमार, भरपाई
- स सफल, सबल, सगुण, सजीव, सावधान, सकर्मक
- चिर चिरकाल, चिरायु, चिरस्थायी
- न नकुल, नास्तिक, नग, नपुंसक, नगण्य, नेति
- बहु बहुमूल्य, बहुवचन, बहुमत, बहुभुज, बहुविवाह, बहुसंख्यक
- आप आपकाज, आपबीती, आपकही, आपसुनी

- सम समकोण, समकक्ष, समतल, समदर्शी, समकालीन, समग्र

प्र-4 प्रत्यय से नए शब्द बनाए |

क्रम	प्रत्यय	उदाहरण
1	अक	लेखक, पाठक, कारक, गायक
2	अन	पालन, सहन, नयन, चरण
3	अना	घटना, तुलना, वन्दना, वेदना
4	अनीय	माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय, श्रवणीय
5	आ	भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भिक्षा
6	आई	लड़ाई, सिलाई, पढ़ाई, चढ़ाई
7	आन	उड़ान, मिलान, दौड़ान
8	इ	हरि, गिरि, दाशरथि, माली
9	इया	छलिया, जड़िया, बढ़िया, घटिया
10	इत	पठित, व्यथित, फलित, पुष्पित

➢ मुहावरे

1. कलई खुलना (रहस्य खुलना) – पुलिस ने जब सेठ धनीराम के व्यापार पर छापा मारा तो उसके कारोबार की कलई खुल गई।
2. कान भरना (चुगली करना) – मंथरा हमेशा कैकेयी के कान भरती रहती थी।
3. खून का प्यासा (जान लेने पर उतारू) – संपत्ति बँटवारे की समस्या ने दोनों भाइयों को एक-दूसरे के खून का प्यासा बना दिया।
4. नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना) – गाँववालों को देखते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।
5. कानाफूसी करना (धीरे-धीरे बात करना) – अध्यापिका जी के कक्षा से बाहर जाते ही बच्चों ने आपस में कानाफूसी शुरू कर दी।
6. चंपत होना (भाग जाना) – बिल्ली सारा दूध पीकर चंपत हो गई।

7. एड़ी-चोटी का जोर लगाना (पूरा जोर लगाना) – मैं कक्षा में प्रथम आने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा हूँ।
8. मुँह में पानी आना (लालच पैदा होना) – रसगुल्लों को देखकर मेरे मुँह में पानी भर आता है।
9. हवा से बातें करना (बहुत तेज़ दौड़ना) – बाबा भारती का घोड़ा हवा से बातें करता था।
10. अगर-मगर करना (टाल-मटोल करना) – माँ ने आयुष से पढ़ने के लिए कहा तो वह अगर-मगर करने लगा।
11. काम तमाम करना (मार डालना) – शेर ने कुछ ही पलों में हिरन का काम तमाम कर दिया।
12. बाट देखना (प्रतीक्षा करना) – हम सब मुख्य अतिथि की बाट देख रहे हैं।
13. दिल दुखाना (कष्ट देना) – हमें कभी भी अपनों का दिल नहीं दुखाना चाहिए।
14. बाल बाँका न होना (जरा भी नुकसान न होना) – इतनी बड़ी दुर्घटना के बाद भी चालक का बाल भी बाँका न हुआ।
15. कान पकना (ऊब जाना) – पलक की बातें सुन-सुनकर मेरे कान पक गए हैं।

➢ लोकोक्तियाँ

1)अक्ल बड़ी या भैंस- काम बुद्धि से होता है, ताकत से नहीं
– एक पहलवान इस समस्या को हल नहीं कर सका, परंतु उस कमज़ोर व्यक्ति ने कितनी आसानी से हल कर दिया।

2)अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत - समय गुज़रने पर पछताना व्यर्थ है
– रेखा फेल होने पर बहुत पछताई कि यदि मेहनत कर लेती तो अवश्य पास हो जाती। पर अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत ।

3)अंधों में काना राजा- मूर्खा में थोड़ा ज्ञानी
– पूरे गाँव में मदन ही थोड़ा पढ़ा लिखा है, बस वही अंधों में काना राजा है।

4)आँख का अंधा नाम नयन सुख- अर्थ के विपरीत नाम
– उसका नाम तो है भोला लेकिन वह बड़े-बड़ों का कान काटता है। इसलिए कहा गया है – आँख का अंधा नाम नयन सुख।

5)उलटा चोर कोतवाल को डाँटे-स्वयं अपराध करके दूसरों पर दोष मढ़ना
– मेरी किताब गंदी करने पर राम मुझे ही डाँटने लगा। मैंने, कहा उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।

6)ऊँची दुकान फीका पकवान -ऊपरी दिखावा
– शो केस में रजत की दुकान में बड़े सुंदर सामान लगे हुए हैं, मगर अंदर सभी डुप्लीकेट माल भरा है। है न ऊँची दुकान फीका पकवान वाली बात।।

7)अंत भला तो सब भला -जिस काम का परिणाम अच्छा हो, वही ठीक है
– मेरी नौकरी तो छोटी-सी थी, अब तरक्की हो जाने पर सब ठीक हो गया, क्योंकि कहावत भी है कि अंत भला तो सब भला।।

8)साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे - आसानी से काम हो जाना
– ठेके और जमींदार के झगड़े में पंच को ऐसा फैसला सुनाना चाहिए कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

(साहित्य-विभाग)

प्र- 8 सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) पक्षी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं?
(a) नल का जल (b) वर्षा का जल
(c) नदी-झरनों का जल (d) पिंजरे में रखी कटोरी का जल

2) बंधन किसका है?
(a) स्वर्ण का (b) श्रृंखला का
(c) स्वर्ण श्रृंखला का (d) मनुष्य का

3) दादी माँ का व्यक्तित्व कैसा था?
(a) स्नेह और ममता भरा (b) क्रोधपूर्ण
(c) झगड़ालु (d) चिढ़चिढ़ा

4) दादी माँ क्यों उदास रहती थी?
(a) पड़ोसियों से झगड़ा होने के कारण
(b) अपने पुत्र द्वारा अपमानित करने के कारण
(c) दादा जी की मृत्यु हो जाने के कारण
(d) पुत्र की मृत्यु हो जाने के कारण

5) लेखक ने किन्हें दूर से देखा था?
(a) हिमालय पर्वत को
(b) हिमालय की चोटियों को
(c) हिमालय से निकलने वाली नदियों को

6) निम्नलिखित में से किस नदी का नाम पाठ में नहीं आया है?
(a) रांची (b) सतलुज
(c) गोदावरी (d) कोसी

7) बेतवा नदी को किसकी प्रेयसी के रूप चित्रित किया गया है? ।
(a) यक्ष की (b) कालिदास की
(c) मेघदूत की (d) हिमालय की

8) कठपुतली कविता के रचयिता हैं
(a) मैथलीशरण गुप्त **(b) भवानी प्रसाद मिश्र**
(c) सुमित्रानंदन पंत (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

9) कठपुतली के मन में कौन-सी इच्छा जागी?
(a) मस्ती करने की (b) खेलने की
(c) आज़ाद होने की (d) नाचने की

10) कठपुतलियों को किनसे परेशानी थी?
(a) गुस्से से (b) पाँवों से
(c) धागों से (d) उपर्युक्त सभी से

11) किसके गान से हलचल मच जाती थी?
(a) किसी गायक के (b) शास्त्रीय संगीतज्ञ से
(c) खिलौनेवाले के (d) इनमें कोई नहीं

12) बच्चों ने हाथी-घोड़े कितने में खरीदा था?
(a) दो रुपए में (b) दो पैसे में
(c) तीन पैसे में **(d) पचास पैसे में**

13) खिलौनेवाले का गान गली भर के मकानों में कैसे लहराता था?

(a) झील की तरह **(b) सागर की तरह**

(c) दो आने में (d) तीन रुपए में

14) चुन्नू-मुन्नू ने कितने में खिलौने खरीदे थे?

(a) तीन पैसे में (b) दो पैसे में

(c) दो आने में (d) तीन रुपए में

15) एनीमिया क्या है?

(a) आँखों की बीमारी

(b) पेट की बीमारी

(c) रक्त की कमी से होने वाली बीमारी

(d) रक्त की अधिकता से होने वाली बीमारी

16) पेट में पाए जाने वाले कीड़े किस बीमारी का कारण बनते हैं?

(a) दमा (b) क्षयरोग

(c) रतौंधी **(d) एनीमिया**

17) डॉक्टर स्लाइड की जाँच किस यंत्र द्वारा कर रही थी?

(a) दूरदर्शी द्वारा **(b) सूक्ष्मदर्शी द्वारा**

(c) दूरबीन द्वारा (d) उपर्युक्त सभी

18) खंभा, पेड़, लैटरबक्स सभी एक साथ कहाँ खड़े थे?

(a) विद्यालय के समीप (b) जंगल के पास

(c) समुद्र के किनारे (d) झील के किनारे

19) पत्र को कौन पढ़ रहा है?

(a) पेड़ (b) कौआ

(c) लैटरबक्स (d) खंभा

20) चिलम के रूप में किसका चित्रण किया गया है?

(a) पहाड़ का (b) पलाश का

(c) अँगीठी का **(d) सूर्य का**

21) कौन-सी अँगीठी दहक रही है?

(a) कोयले की (b) लकड़ी की

(c) पलाश के जंगल की (d) प्रकृति की

22) माधवदास चिड़िया से क्या चाहता था?

(a) वह वहाँ खूब गाए (b) वह पेड़ों पर झूमे

(c) वह वहीं रह जाए (d) वह वहाँ से भाग जाए।

23) बच्चे किस्से अपनी संपत्ति मानते थे?

(a) स्वयं को **(b) पेड़ को**

(c) अपनी जगह को (d) किसी को नहीं

24) यासुकी-चान को क्या रोग था?

(a) पोलियो का (b) पेड़ पर चढ़ने के लिए

(c) आपस में मिलने के लिए (d) कहीं चलने के लिए

25) तोत्तो-चान ने अपनी योजना का सच सर्वप्रथम किसे बताया?

(a) यासुकी-चान को (b) अपनी माँ को

(c) यासुकी-चान की माँ को **(d) रॉकी को**

प्र -9 अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 पंछी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं?
उत्तर - पंछी नदी और झरनों का बहता जल पीना पसंद करते हैं।
प्रश्न-2 पंछियों के अरमान क्या थे?
उत्तर - पंछियों के आकाश की सीमा तक उड़ने के अरमान थे।

प्रश्न-3 पंछी कैसा जीवन चाहते हैं?
उत्तर - पंछी एक स्वतंत्र जीवन चाहते हैं।
प्रश्न-4 दादी माँ ज्वर का अनुमान कैसे लगाती थीं?
उत्तर - दादी माँ छू-छूकर ज्वर का अनुमान लगाती थीं।
प्रश्न-5 दादी माँ कौन से जल से नहाकर आई थीं?
उत्तर - दादी माँ जलाशय के झागभरे जल से नहाकर आई थीं।
प्रश्न-6 लेखक ने नदियों का कुछ और रूप कब देखा?
उत्तर - जब लेखक हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो उसने नदियों का कुछ और रूप ही देखा।
प्रश्न-7 हिमालय पर नदियों का रूप और स्वभाव कैसा होता है?
उत्तर - हिमालय पर नदियाँ दुबली पतली होती हैं और इनके स्वभाव में चंचलता होती है।
प्रश्न-8 इस पाठ में हिमालय की बेटियाँ किन्हें कहा गया है?
उत्तर - इस पाठ में हिमालय की बेटियाँ नदियों को कहा गया है।
प्रश्न-9 लेखक ने किसको ससुर और किसको दामाद कहा है?
उत्तर- लेखक ने हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहा है।
प्रश्न-10 नदियों का उल्लास कहाँ जाकर गायब हो जाता है?
उत्तर- नदियों का उल्लास मैदान में जाकर गायब हो जाता है।
प्रश्न-11 'कठपुतली' कविता के रचयिता कौन हैं?
उत्तर- 'कठपुतली' कविता के रचयिता भवानीप्रसाद मिश्र हैं।
प्रश्न-12 खिलौने देख कर बच्चों को कैसा लगता है?
उत्तर - बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते।
प्रश्न-13 मुन्नू ने खिलौना कितने पैसे में ख़रीदा?
उत्तर - मुन्नू ने खिलौना दो पैसे में ख़रीदा।
प्रश्न-14 मुरलीवाला कैसा साफ़ा बाँधता था?
उत्तर - मुरलीवाला बीकानेरी रंगीन साफ़ा बाँधता था।
प्रश्न-15 चुन्नू और मुन्नू ने कौन सा खिलौना ख़रीदा?
उत्तर - चुन्नू और मुन्नू ने हाथी और घोडा ख़रीदा।
प्रश्न-16 एनीमिया क्या होता है?
उत्तर - रक्त में लाल कणों की कमी को एनीमिया कहते हैं।
प्रश्न-17 डॉक्टर दीदी ने अनिल को दिव्या के बारे में क्या बताया?
उत्तर - डॉक्टर दीदी ने अनिल को बताया कि दिव्या को एनीमिया है।
प्रश्न-18 खंभे को कौन सी रातें अच्छी नहीं लगती?
उत्तर - खंभे को बरसात की रातें अच्छी नहीं लगती।
प्रश्न-19 खंभा बीमार क्यों नहीं पड़ता था?
उत्तर - खंभा लोहे का बना था इसलिए वह बीमार नहीं पड़ता था।
प्रश्न-21 पहाड़ के नीचे बहती हुई नदी कैसी प्रतीत होती है?
उत्तर - पहाड़ के नीचे बहती हुई नदी घुटनों पर रखी चादर सी प्रतीत होती है।

प्र-10 लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 पिंजरे में पंछी क्या-क्या नहीं कर सकते?
प्रश्न-2 कविता में पंछी क्या याचना कर रहें हैं?
प्रश्न-3 इस कविता के माध्यम से पंछी क्या संदेश देना चाहते हैं?
प्रश्न-4 दादी माँ का व्यवहार कैसा था?
प्रश्न-5 लेखक को चादर में बड़ी हँसी आ रही थी परन्तु वो हँसना क्यों नहीं चाहता था?
प्रश्न-6 पर्वतराज हिमालय को सौभाग्यशाली क्यों कहा गया है?
प्रश्न-7 कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?
प्रश्न-8 रोहिणी फेरीवाले के बारे में क्यों जानना चाहती थी?
प्रश्न-9 रक्त में सफ़ेद कणों का क्या महत्व होता है?
प्रश्न-10 रक्त के सफ़ेद कणों को 'वीर सिपाही' क्यों कहा गया है?
प्रश्न-11 लैटरबक्स को अपना बहुत महत्व क्यों लगता है?
प्रश्न-12 माँ के पास पहुँच कर चिड़िया की क्या हालत हुई?
प्रश्न-13 माधवदास ने चिड़िया को क्या - क्या प्रलोभन दिए?

प्र-11 दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 लेखक बचपन और अब की बीमारी में क्या अंतर महसूस करता है?
प्रश्न-2 काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?
प्रश्न-3 मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?
प्रश्न-4 ब्लड-बैंक में रक्तदान से क्या लाभ है?
प्रश्न-5 खून को 'भानुमती का पिटारा' क्यों कहा जाता है?
प्रश्न-6 पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई?
प्रश्न-7 माधवदास क्यों बार-बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है? क्या माधवदास निःस्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था? स्पष्ट कीजिए।

(बाल महाभारत)

प्रश्न-1 महर्षि वैशंपायन कौन थे?
उत्तर - महर्षि वैशंपायन व्यास जी के प्रमुख शिष्य थे ।
प्रश्न-2 धृतराष्ट्र ज्येष्ठ पुत्र थे फिर पांडु को गद्दी पर क्यों बिठाया गया?
उत्तर - धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे इसलिए उस समय की निति के अनुसार पांडु को गद्दी पर बिठाया गया ।
प्रश्न-3 किसके यज्ञ में सूत जी भी मौजूद थे?
उत्तर - महाराजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय के यज्ञ में सूत जी भी मौजूद थे ।
प्रश्न-4 देवव्रत का नाम भीष्म क्यों पड़ा?
उत्तर - देवव्रत का नाम भीष्म इसलिए पड़ा क्योंकि उन्होंने आजन्म ब्रह्मचारी रहने की कठोर प्रतिज्ञा की थी।
प्रश्न-5 सत्यवती और शांतनु के कितने पुत्र हुए?
उत्तर - सत्यवती और शांतनु के दो पुत्र हुए - चित्रांगद और विचित्रवीर्य।
प्रश्न-6 भीष्म काशी क्यों गए?
उत्तर - भीष्म काशिराज की कन्यायों के स्वयंवर में सम्मिलित होने काशी गए ।
प्रश्न-7 राजा शूरसेन कौन थे?
उत्तर- यदुवंश के प्रसिद्ध राजा शूरसेन श्रीकृष्ण के पितामह थे।
प्रश्न-8 कर्ण का पालन पोषण कहाँ हुआ?
उत्तर - कर्ण का पालन पोषण अधिरथ नाम के एक सारथी के यहाँ हुआ।

प्रश्न-9 कर्ण कौन थे?
उत्तर - कुंती ने सूर्य के संयोग से सूर्य के समान तेजस्वी और सुंदर बालक को जन्म दिया जो आगे चलकर कर्ण के नाम से विख्यात हुए।
प्रश्न-10 विदुर कौन थे?
उत्तर- विचित्रवीर्य की रानी अंबालिका की दासी के पुत्र आगे चलकर विदुर के नाम से प्रख्यात हुए।
प्रश्न-11 राजा शांतनु क्यों चिंतित थे?
उत्तर - राजा शांतनु इसलिए चिंतित थे क्योंकि वह सत्यवती से विवाह करना चाहते थे पर सत्यवती के पिता केवटराज ने जो शर्त रखी वो अनुचित थी।
प्रश्न-12 राजा शांतनु क्यों प्रसन्न थे?
उत्तर- राजा शांतनु देवव्रत को पुत्र के रूप में पाकर प्रसन्न थे।
प्रश्न-13 दुर्योधन के सलाहकार कौन थे?
उत्तर - दुर्योधन के सलाहकार मामा शकुनी और कर्ण थे।
प्रश्न-14 द्रोण परशुराम के पास क्यों गए?
उत्तर - द्रोण परशुराम के पास इसलिए गए क्योंकि उन्हें खबर लगी कि परशुराम अपनी सारी संपत्ति गरीब ब्राह्मणों को बाँट रहे हैं।
प्रश्न-15 कर्ण ने अर्जुन से क्या कहा?
उत्तर - कर्ण ने अर्जुन से कहा कि जो भी करतब उसने यहाँ दिखाए हैं, उनसे बढ़कर कौशल वह दिखा सकता है।
प्रश्न-16 कौरवों और पांडवों ने अस्त्र विद्या किनसे सीखा?
उत्तर - कौरवों और पांडवों ने अस्त्र विद्या कृपाचार्य से सीखा।
प्रश्न-17 भीम पर विष का क्या असर हुआ?
उत्तर- भीम को विष के कारण गहरा नशा हो गया था।

प्रश्न-18 धृतराष्ट्र के कितने पुत्र थे? वे क्या कहलाते थे?
उत्तर- धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। वे कौरव कहलाते थे।
प्रश्न-19 पाण्डु के अकाल मृत्यु हो जाने पर किसने राज काज सँभाला और क्यों?
उत्तर - पाण्डु के अकाल मृत्यु हो जाने पर धृतराष्ट्र ने राज काज सँभाला क्योंकि पांडव बालक थे।
प्रश्न-20 पांचाल देश में भी पांडव ब्राह्मण-वेश में ही क्यों गए?
उत्तर - पांचाल देश में भी पांडव ब्राह्मण-वेश में ही इसलिए गए जिससे उनको कोई पहचान न सके।
प्रश्न-21 कर्ण ने दुर्योधन को क्या सलाह दी?
उत्तर - कर्ण ने दुर्योधन को पांडवों पर हमला करने की सलाह दी।

(लेखन-विभाग)

प्र-12 संवाद लेखन लिखिए |
1) अपने-अपने जीवन लक्ष्य के बारे में दो मित्रों की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।
रंजन – मित्र चंदन! बारहवीं के बाद तुमने क्या सोचा है?
चंदन – मित्र रंजन! मैंने तो अपना लक्ष्य पहले से ही तय कर रखा है। मैंने डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई भी शुरू कर दिया|
रंजन – डॉक्टर ही क्यों?
चंदन – मैं डॉक्टर बनकर लोगों की सेवा करना चाहता हूँ।
रंजन – पर सेवा करने के तो और भी तरीके हैं ?
चंदन – पर मुझे यही तरीका पसंद है। डॉक्टर ही रोते-तड़पते मरीज के चेहरे पर मुसकान लौटाकर वापस भेजते हैं।
रंजन – पर कुछ डॉक्टर का भगवान का दूसरा रूप नहीं कहा जा सकता है?

चंदन – पर मैं सच्चा डॉक्टर बनकर दिखाऊँगा पर तुमने क्या सोचा है, अपने जीवनलक्ष्य के बारे में?
रंजन – पर इतनी मेहनत तो अपने वश की नहीं। सुना है-डॉक्टर, इंजीनियर बनने के लिए बड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है जो मेरे वश की नहीं।
चंदन – पर बिना मेहनत सफलता कैसे पाओगे? रंजन-मैं नेता बनकर देश सेवा करना चाहता हूँ।
चंदन – तूने ठीक सोचा है। हल्दी लगे न फिटकरी, रंग बने चोखा।
रंजन – नेता बनना भी आसान नहीं है। तुम्हारे लक्ष्य के लिए शुभकामनाएँ।

2) बढ़ती महँगाई को लेकर दो नागरिकों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

हरिप्रसाद – अरे पंकज क्या लाए हो बाजार से?
पंकज – जी, अंकल ज्यादा कुछ नहीं, बस थोड़ी सी दालें और चावल ही लाया हूँ।
हरिप्रसाद – अब इस बढ़ती महँगाई ने तो सबका हाथ ही तंग कर दिया है।
पंकज – कुछ न पूछिए! सभी चीजों के दाम आसमान को छू रहे हैं, कोई भी चीज सस्ती नहीं है। कुछ दालों के तो 200 रुपए किलो तक पहुँच गए हैं।
हरिप्रसाद – दालें ही क्या सभी चीजें इतनी महँगी हो गई हैं कि वे आम आदमी की पहुँच से बाहर होती जा रही हैं।
पंकज – पर मेरी एक बात समझ में नहीं आती। महँगाई को रोकने के लिए सरकार क्यों कुछ नहीं कर रही है?
हरिप्रसाद –अरे भैया! मुझे तो लगता है दाल में कुछ काला है। वरना सरकार चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकती। महँगाई के खिलाफ़ कानून बना सकती है। चीजों के दाम तय कर सकती है।
पंकज – यही नहीं, उचित दाम से अधिक मूल्य वसूलने वालों को धर पकड़ भी सकती है।
हरिप्रसाद – हाँ, सरकार आए दिन कुछ न कुछ बयान अवश्य देती है। कभी वायदे करती है, कभी योजनाएँ बनाती है, पर न तो वे वायदे कभी पूरे होते हैं और न ही वे योजनाएँ।
पंकज – आश्चर्य की बात यह है कि विपक्षी पार्टियाँ भी सरकार पर दबाव डालने के लिए कुछ नहीं कर रही हैं।

(3) रोगी और डॉक्टर के बीच संवाद |

रोगी- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!
डॉक्टर - नमस्कार! आइए, ! कहिए, क्या हाल है ?
रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।
डॉक्टर - घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्दी अच्छे हो जायेंगे।
रोगी-- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन (बिस्तर)पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।
डॉक्टर- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए।सब ठीक हो जायेगा।
रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।
डॉक्टर- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।
रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ?
डॉक्टर- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।
रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।
डॉक्टर- अच्छा, नमस्कार।

प्र-13 निम्नलिखित विषय पर निबंध लिखिए |

1) समय का सदुपयोग

संकेत-बिंदु –

- प्रस्तावना

- समय का अधिकाधिक उपयोग
- प्रकृति से सीख
- समय नियोजन का महत्त्व
- आलस्य समय के सदुपयोग में बाधक
- उपसंहार

प्रस्तावना – मनुष्य अपने जीवन में बहुत कुछ कमाता है और बहुत गँवाता है। उसे प्रत्येक वस्तु परिश्रम के उपरांत प्राप्त होती है, परंतु प्रकृति ने उसे समय का अमूल्य उपहार मुफ़्त दिया है। इस उपहार की अवहेलना करके उसकी महत्ता न समझने वालों को एक दिन पछताना पड़ता है क्योंकि गया समय लौटकर वापस नहीं आता है। जो समय बीत गया उसे किसी हाल में लौटाया नहीं जा सकता है।

समय नियोजन का महत्त्व – समय ऐसी शक्ति है जिसका वितरण सभी के लिए समान रूप से किया गया है, परंतु उसका लाभ वही उठा पाते हैं जो समय का उचित नियोजन करते हैं। प्रकृति ने किसी के लिए भी छोटे दिन नहीं बनाया है परंतु नियोजनबद्ध तरीके से काम करने वाले हर काम के लिए पूरा समय बचा लेते हैं और अनियोजित तरीके से काम करने वालों का काम समय पर पूरा न होने से समय की कमी का रोना रोते हैं। समय का नियोजन न करने वालों को समय पीछे ढकेल देता है और समय का सदुपयोग करने वाले सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं।

- महापुरुषों की सफलता का रहस्य उनके द्वारा समय का नियोजन ही है जिससे वे समय पर अपने काम निपटा लेते हैं। गांधी जी समय के एकएक क्षण का सदुपयो-ग करते थे। वे अपनी दिनचर्या के अनुरूप रोज़ का काम रोज़ निपटाने के लिए तालमेल बिठा लेते थे। विद्यार्थी जीवन में समय का सदुपयोग और उसके नियोजन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि इसी काल में उसे विद्यार्जन के अलावा शारीरिक और चारित्रिक विकास पर भी ध्यान देना होता है।

समय का अधिकाधिक उपयोग – समय का महत्त्व और मूल्य समझकर हमें इसका अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। वे अपने समयानुसार आते-जाते रहते हैं। यह तो व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है कि वे उनका उपयोग करते हैं या सदुपयोग। समय के बारे में एक बात सत्य है कि समय किसी की भी परवाह नहीं करता। यह किसी शासक, राजा या तानाशाह के रोके नहीं रुका है। जिन लोगों ने समय को नष्ट किया है, समय उनसे बदला लेकर एक दिन उन्हें अवश्य नष्ट कर देता है इस क्षणभंगुर मानव जीवन में काम अधिक और समय बहुत कम है। समय के एक-एक पल की कीमत समझते हुए संत कबीर दास ने ठीक ही लिखा है –

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब॥

आलस्य समय के सदुपयोग में बाधक – कुछ लोग समय का उपयोग तो करना चाहते हैं, परंतु आलस्य उनके मार्ग में बाधक बन जाता है। यह मनुष्य को समय पर काम करने से रोकता है। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। जो लोग बुद्धिमान होते हैं वे खाली समय का उपयोग अच्छी पुस्तकें पढ़ने में करते हैं इसके विपरीत मूर्ख अपने समय का उपयोग सोने और झगड़ने में करते हैं।

उपसंहार – प्रकृति ने समय का बँटवारा सभी के लिए बराबर किया है। हमें चाहिए कि हम इसी समय का उचित नियोजन करें और प्रत्येक कार्य को समय पर निपटाने का प्रयास करें। आज का कार्य कल पर छोड़ने की आदत आलस्य को बढ़ावा देती है। हमें समय का उपयोग करते हुए सफलता अर्जित करने का प्रयास करना चाहिए।

2) महात्मा गांधी पर निबंध

महात्मा गाँधी का प्रारंभिक जीवन

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर सन् 1867 को, पश्चिम भारत (वर्तमान गुजरात) के एक तटीय शहर में हुआ। इनके पिता का नाम करमचंद गाँधी तथा माता का नाम पुतलीबाई था। महात्मा गाँधी के पिता कठियावाड़ के छोटे से रियासत (पोरबंदर) के दिवान थे। आस्था में लीन माता और उस क्षेत्र के जैन धर्म के परंपराओं के कारण गाँधी जी के जीवन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। जैसे की आत्मा की शुद्धि के लिए उपवास करना आदि। 13 वर्ष की आयु में गाँधी जी का विवाह कस्तूरबा से करवां दिया गया था।

महात्मा गाँधी की शिक्षा दीक्षा

गाँधी जी का बचपन में पढ़ाई में मन नहीं लगता था पर बचपन से ही उन्हें उचित अनुचित में फर्क पता था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर से संपंन हुई, हाईस्कूल की परिक्षा इन्होंने राजकोट से दिया। और मैट्रीक के लिए इन्हें अहमदाबाद भेज दिया गया। बाद में वकालत इन्होंने लंदन से संपन्न किया।

महात्मा गाँधी का शिक्षा में योगदान

महात्मा गाँधी का यह मानना था भारतीय शिक्षा सरकार के नहीं अपितु समाज के अधिन है। इसलिए महात्मा गाँधी भारतीय शिक्षा को 'द ब्यूटिफुल ट्री' कहा करते थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान रहा। भारत का हर नागरिक शिक्षित हो यही उनकी इच्छा थी। गाँधी जी का मूल मंत्र 'शोषण विहिन समाज की स्थापना' करना था।

गाँधी जी के आधारभूत शिक्षा सिद्धांत

- 7 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा मिलनी चाहिए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
- साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता।
- शिक्षा बालक के मानवीय गुणों का विकास करता है।

निष्कर्ष

बचपन में गाँधी जी को मंदबुद्धि समझा जाता था। पर आगे चल कर इन्होंने भारतीय शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3) रक्षाबंधन

हार्दिक मिलन भाव को प्रकट करने वाले त्योहारों में रक्षा बंधन का त्योहार एक प्रमुख और आकर्षक त्योहार है। यह त्योहार प्राचीनतम त्योहारों में से एक है और नवीन त्योहारों में अत्यन्त नवीन है। यह मंगल का त्योहार है और प्रेम तथा सौहार्द्र का सूचक भी है। अतएव रक्षा बंधन का त्योहार पवित्रता और उल्लास का त्योहार है।

रक्षा बंधन का त्योहार हमारे देश में एक छोर से दूसरी छोर तक बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। यह त्योहार न केवल हिन्दुओं का ही त्योहार है, अपितु हिन्दुओं की देखा देखी अन्य जातियों व वर्गों ने भी इस त्योहार को अपनाना शुरू कर दिया है। ऐसा इसलिए कि यह त्योहार धर्म और सम्बन्ध की दृष्टि से अत्यन्त पुष्ट और महान त्योहार है। धर्म की दृष्टि से यह गुरू-शिष्य के परस्पर नियम सिद्धांतों सहित उनके परस्पर धर्म को प्रतिपादित करने वाला है। सम्बन्ध की दृष्टि से यह त्योहार भाई बहन के परस्पर सम्बन्धों की गहराई को प्रकट करने वाला एक दिव्य और श्रेष्ठ त्योहार है। अतएव रक्षा बंधन का त्योहार एक महान उच्च और श्रेष्ठ त्योहार ठहरता है।

रक्षा बंधन का त्योहार भारतीय त्योहारों में से एक प्राचीन त्योहार है। इस दिन बहन भाई के लिए मंगल कामना करती हुई उसे राखी बांधती है। भाई उसे हर स्थिति में रक्षा करने का वचन देता है। इस प्रकार रक्षा बंधन भाई बहन के पावन स्नेह का त्योहार है।

धार्मिक दृष्टि से इस त्योहार का आरम्भ और प्रचलन अत्यन्त प्राचीन है। विष्णु पुराण के अनुसार भगवान विष्णु ने जब वामन अवतार लिया था, तब उन्होंने सुप्रसिद्ध अभिमानी दानी राजा बलि से केवल तीन पग धरती दान में माँगी थी। बलि द्वारा स्वीकार करने पर भगवान वामन ने सम्पूर्ण धरती को नापते हुए बलि को पाताल में भेज दिया। इस कथा में कुछ धार्मिक भावनाओं को जोड़कर इसे रक्षा बंधन के रूप में याद किया जाने लगा। उसी स्मृति में इस त्योहार का प्रचलन हुआ।

आज रक्षा बंधन का त्योहार समस्त भारत में बहुत खुशी और स्नेह भावना के साथ प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु में श्रवण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहनें पवित्र भावनाओं के साथ अपने भाइयों को टीका लगाती हैं। उन्हें मिष्ठान्न खिलाती हैं। वे उनकी आरती उतार कर उनको राखी बाँधती हैं। भाई यथाशक्ति उन्हें इसके उपलक्ष्य में कुछ न कुछ अवश्य भेंट करता है। गुरू, आचार्य, पुरोहित आदि ब्राहमण प्रवृत्ति के व्यक्ति अपने शिष्य और यजमानों के हाथ में रक्षा सूत्र बांधकर उनसे दान प्राप्त करते हैं। हमें इस महान और पवित्र त्योहार के आदर्श की रक्षा करते हुए इसे नैतिक भावों के साथ खुशी खुशी मनाना चाहिए।

प्र-14 निम्नलिखित विषय पर पत्र लिखिए |

1) छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
केंद्रीय विद्यालय
कालिंदी विहार, नई दिल्ली।
विषय ना पत्रछात्रवृत्ति हेतु प्रार्थ –
महोदय
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा सातवीं की छात्रा हूँ। मेरे पिता जी की आर्थिक 'ए'
स्थिति अच्छी नहीं है। वे विद्यालय के शुल्क तथा अन्य खर्चे का भार उठा पाने में असमर्थ हैं। मैं अपनी
कूद व अन्य प्रतियोगिताओं में भी मैंने अनेक -ही हूँ तथा खेलपिछली कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करती र
पदक प्राप्त किए हैं।
अतः आप से अनुरोध है कि मुझे विद्यालय के छात्रवृत्ति कोष से छात्रवृत्ति प्रदान करने का कष्ट करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।
आपकी आज्ञाकारी शिष्या,
नेहा तिवारी
कक्षा-सातवीं
दिनांक.......

2) छोटे भाई को परीक्षा में सफलता पाने पर बधाई पत्र लिखिए।

छात्रावास कक्षा संख्या-15
इंजीनियरिंग कॉलेज पटियाला
सेक्टर IT Section, पंजाब
प्रिय ओजस्व

प्रसन्न रहो यहाँ सब कुशल है। आशा है वहाँ तुम भी सकुशल होंगे। कल ही पिता जी का पत्र मिला। पत्र पढ़कर पता चला कि इस वर्ष कक्षा में प्रथम आए हो और सभी विषयों में 'ए' श्रेणी प्राप्त की है। सच मानो पढ़कर बहुत खुशी हुई। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि सफलता सदैव तुम्हारे कदम चूमें और तुम आसमान की ऊँचाई तक पहुँचो।

मैंने तुमसे वादा किया था कि अगर तुम कक्षा में प्रथम आओगे तो एक अच्छी घड़ी मेरी ओर से तुम्हें पुरस्कार स्वरूप दूंगा। दशहरे की छुट्टियों में जब मैं घर जाऊँगा तो तुम्हारी पसंद की घड़ी दिलाऊँगा। माँ और पिता जी को मेरा सादर प्रणाम कहना।।

तुम्हारा अग्रज
प्रणव
पटियाला, पंजाब

3) अपनी सहेली को उसके जन्म दिन पर न पहुँच पाने का कारण बताते हुए पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक 22 अगस्त 2021
प्रिय अंशु
मधुर स्मृतियाँ

मैं सपरिवार यहाँ सकुशल हूँ और ईश्वर से तुम्हारे परिवार की कुशलता की प्रार्थना करती हैं। पिछले महीने की 22 तारीख को तुम्हारा जन्मदिन था। तुमने बड़े प्यार से मुझे निमंत्रित भी किया था, परंतु मैं तुम्हारे जन्म दिन में नहीं आ सकी। इसका मुझे बहुत अफसोस है। मुझे पता है कि तुम मुझसे बहुत नाराज़ हो, इसलिए तुमने विद्यालय में भी मुझसे बात नहीं की। जब तुम्हें मेरे न आने का पता चलेगा, तब तुम मुझे अवश्य क्षमा कर दोगी। मेरी दादी की तबियत अचानक बहुत खराब हो गई थी। हम सभी दोपहर से लेकर रात तक अस्पताल में ही थे, इसलिए मैं तुम्हारे जन्मदिन की पार्टी में शामिल नहीं हो सकी।

आशा है, तुम मुझे अवश्य क्षमा कर दोगी।
तुम्हारी सहेली
कोमल।

प्र-15 सूचना लेखन लिखिए |

1) स्कूल में निबंध प्रतियोगिता के आयोजन हेतु सूचना।

सूचना
सती पब्लिक स्कूल
बनकोट , उत्तर प्रदेश
निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

आप सभी विद्यार्थियों को यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि हमारे विद्यालय में गाँधी जयंती के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें प्रथम , दुतीय व तृतीय स्थान पाने वाले को क्रमशः 20, 000/-, 15,000/- , 10,000/-रूपये का पुरुस्कार दिया जायेगा।

दिनांक – 2 अक्टूबर 2020
समय – 10:10 am
इच्छुक छात्र-छात्राएं अपना नाम अपने क्लास टीचर को 25 सितंबर 2020 तक दे दें।
निशांत गर्ग
स्कूल प्रबंधक

2) आप जी० डी० गोयनका इंटरनेशनल स्कूल, वेसू सूरत में हिंदी साहित्य समिति के सचिव हैं |आपके विद्यालय में आयोजित दोहा गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को आमंत्रित करते हुए एक सूचना पत्र लिखें |

जी० डी० गोयनका इंटरनेशनल स्कूल, वेसू, सूरत

सूचना

26 जुलाई 20 (वर्तमान वर्ष)

दोहा गायन प्रतियोगिता के लिए सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि अन्तः विद्यालयी दोहा गायन प्रतियोगिता विद्यालय के सभागार में आयोजित है | इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों के नाम आमंत्रित हैं|

दिनांक - 30 जुलाई 20 - -

समय - प्रातः 10 बजे

स्थान - विद्यालय सभागार

विषय - दोहा गायन

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 30 जुलाई 20 - -तक हिंदी साहित्य समिति के सचिव को दें |

हरीओम दूबे

सचिव

हिंदी साहित्य समिति